सफलता की कहानियां

-जिला मंडी

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

हिमाचल सरकार

मार्गदर्शन

ओंकार शर्मा (भा.प्र.से.)
प्रधान सचिव (कृषि)

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
राज्य परियोजना निदेशक
एवं विशेष सचिव (कृषि)

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप–संपादक

सहयोग

डॉ० ब्रह्म दास जसवाल
जिला परियोजना निदेशक, मंडी

डॉ० हितेंद्र सिंह
उप–परियोजना निदेशक–।।

हिमाचल प्रदेश सरकार

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान–बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान–बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। मौसमी–बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 7500 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों एवं अन्य खेती रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि–बागवानी लागत और भोजन व फल–सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान–बागवान की आय दोगुनी करने का मा॰ प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। बिलासपुर जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने–2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान से जुड़े कृषि अधिकारियों और किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

–जयराम ठाकुर

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण
विकास एवं पंचायती राज मंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला - 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान-बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले दो वर्षो में लगभग 77,000 किसान-बागवानों का 2,957 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि-भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान-बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट-बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल-जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय पहल है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान-बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान-बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

- वीरेन्द्र कंवर

प्रधान सचिव
कृषि एवं जनजातीय विकास
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

कृषि – बागवानी क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के किसानों ने एक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। लेकिन इसी खेती – बागवानी में कुछ प्रमुख चुनौतियां भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं। खेती में रसायनों का दुरूपयोग जिससे खेती की लागत का बढ़ना, उत्पादकता का स्थिर होना या घटना, एक – फसल खेती एवं उससे बाजार में फसल की प्रचुरता से भाव न मिलना इत्यादि प्रमुख हैं। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारम्भ कर प्रदेश सरकार ने 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाने का नीतिगत फैसला लिया है।

इस खेती विधि को देशभर में मिल रही अपार सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह विधि खेती को रसायनमुक्त कर किसान के खेती व्यय को बहुत कम कर देती है। इसमें पानी की आवश्यकता घट जाती है तथा भूमि की उर्वरता भी लगातार बनी रहती है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने इस परियोजना के लक्ष्य प्राप्ति हेतु गम्भीर प्रयास प्रारम्भ किये हैं। आंकड़ों के अनुसार 77,107 से अधिक किसानों का इस विधि से जुड़ाव इस तथ्य को साबित करता है कि यह विधि किसान आय वृद्धि हेतु एक सशक्त विकल्प है।

परियोजना के संचालन के थोड़े समय बाद ही 'प्राकृतिक खेती' से जुड़े सफल किसानों की कहानियों का प्रकाशन इस परियोजना का सफलता की ओर बढ़ना दर्शाता है। मैं मण्डी जिला के सभी प्राकृतिक किसानों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' को इस प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

– ओंकार शर्मा

हिमाचल प्रदेश सरकार

विशेष सचिव, कृषि
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती–बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रसायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक खेती' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले दो वर्ष के छोटे से अन्तराल में 77,107 से अधिक किसान–बागवानों ने अपने–2 खेत–बागीचों में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

मण्डी जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

–राकेश कंवर

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) यह वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतू एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 80 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 3,226 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 7,500 करोड़ की फल – सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि – बागवानी लागत, किसान – बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल – सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक – फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल – सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक – फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती – बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' करने हेतु फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान – बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारक संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 78,792 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं जिनमें से 77,107 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

– प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

जिला मंडी-परिदृश्य

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,982 वर्ग किलोमीटर (3,98,289 हैक्टेयर) है, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 13.9 प्रतिशत है। इस जिले की सीमाएं काँगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, शिमला, सोलन व कुल्लु जिलों से लगती हैं। क्षेत्रफल के आधार पर प्रदेश में इस जिला का 7वां स्थान है। समुद्र तल से जिला की ऊंचाई 651 – 4500 मीटर तक है। ऊपरी मंडी के चार विकास खण्डों करसोग, सराज, गोहर व बालीचौकी में सेब उत्पादन के साथ – साथ मटर तथा अन्य विदेशी सब्जियों की खेती की जाती है, जबकि शेष बचे 7 विकास खण्डों के किसान गेहूं, धान, मक्की व सब्जियों की खेती करते हैं।

मंडी जिला की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। जिला के किसान हर प्रकार की फसलें उगाकर अच्छा मुनाफा कमाते हैं। यहाँ के किसान विशेष रूप से शिमला मिर्च, टमाटर, आलू, बीन्स, मटर, गोभी, बोकली, बंदगोभी, खीरा, घीया, कदू, बैंगन आदि सब्जियां पैदा करते हैं। जिले का बल्ह क्षेत्र प्रमुख टमाटर उत्पादक के रूप में उभरा है। फलों में सेब, कीवी, खुमानी, संतरा, किनू, लीची और आम की खेती भी कुछ स्तर पर की जा रही है।

यहां के किसानों द्वारा लगाई पौधशालाओं से न केवल हिमाचल अपितु पड़ोसी राज्यों के किसान – बागवान भी फल – सब्जियों के पौधे लेकर जाते हैं। जिला के करसोग विकास खंड में कई प्रगतिशील बागवान अपनी पौधशालाओं से शिमला और कुल्लू जिले के किसानों को सेब, खुमानी, प्लम, अखरोट एवं संतरे के पौधे दे रहे हैं। प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर भी मंडी के किसानों ने कई अवार्ड हासिल कर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। पारम्परिक बीजों को बचाने का एक अनूठा अभियान भी करसोग क्षेत्र के किसानों ने सफलतापूर्वक चलाया है।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
1,54,302

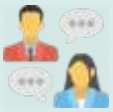

भाषा
हिंदी, मण्डयाली

आबादी
9,99,777

कुल क्षेत्रफल
3,98,289 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
91000 हैक्टेयर

वर्ष 2019-20 में लक्षित प्राकृतिक खेती किसान
8000

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खण्डवार स्थिति

क्रम सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान 31 अगस्त 2020 तक	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान 31 अगस्त 2020 तक	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमी (हैक्टेयर में)
1	सुंदरनगर	17,473	654	1,090	39.18
2	बल्ह	17,949	730	1,101	59.72
3	सदर	13,487	791	1,142	47.24
4	द्रंग	13,324	669	1,042	41.42
5	चौंतड़ा	14,022	987	1,385	53.18
6	गोहर	13,610	1419	1,181	48.32
7	सराज	7,412	991	1,188	70.32
8	बालीचौकी	9,159	622	849	41.86
9	करसोग	15,908	1,327	1470	76.06
10	गोपालपुर	16,239	890	1,162	45.42
11	धर्मपुर	15,719	1,091	1,076	43.33
	कुल योग	1,54,302	10,171	12,686	566.59

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

सफल प्राकृतिक खेती किसान

रूप चंद राही, ढीम कटारू पंचायत, सराज ब्लॉक

सोमकृष्ण, पांगणा पंचायत, करसोग ब्लॉक

माया राम, स्यांज पंचायत, गोहर ब्लॉक

इंदिरा राणा, मसोली पंचायत, द्रंग ब्लॉक

हेतराम, रोड पंचायत, सराज ब्लॉक

मानचंद, भद्रवाड पंचायत, गोपालपुर ब्लॉक

अनिल कुमार, भडयाड़ा पंचायत, चौंतड़ा ब्लॉक

देवराज भारती, पसल पंचायत, चौंतड़ा ब्लॉक

हुकम चंद, सैण पंचायत, सदर ब्लॉक

परमा राम, छात्र पंचायत, सुन्दरनगर ब्लॉक

लीना शर्मा, पांगणा पंचायत, करसोग ब्लॉक

संजय कुमार, पलौटा पंचायत, सुन्दरनगर ब्लॉक

छोटी उम्र में संभाली परिवार की जिम्मेदारी, अब प्राकृतिक खेती के बने प्रणेता

रूप चंद राही
मो. 8219235492

सराज ब्लॉक की ढीम कटारू पंचायत के रुप चंद राही ने छोटी सी उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारी सम्भाल ली थी। परिवार के भरण–पोषण के लिए उन्होंने खेती को ही व्यवसाय के रूप में चुना। लेकिन खेती उनकी अलग पहचान बना सकती है, ऐसा कभी स्वपन में भी नहीं सोचा था। आज रुप चंद राही मंडी जिला में प्राकृतिक खेती के अग्रणी बनकर उभरे हैं। प्राकृतिक विधि से फलोत्पादन कर जहां उन्होंने अपनी लागत को कम किया, वहीं आस–पास के किसान–बागवानों को इस पर्यावरण हितैषी विधि की तरफ मोड़ने का कार्य भी किया है।

दो साल पहले तक रूप चंद भी क्षेत्र के अन्य किसानों की तरह रसायनिक विधि से अपने बागीचों में फलोत्पादन कर रहे थे, लेकिन इन रसायनों के बढ़ते खर्चे एवं मानव, पर्यावरण पर पड़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए वह इनके प्रयोग को त्यागने का मन बना चुके थे। रसायनमुक्त खेती तकनीक के लिए उन्होंने इंटरनेट पर खोजबीन करनी शुरू कर दी तब उन्हें प्राकृतिक खेती विधि के बारे में पता चला।

'मैनें इंटरनेट पर मौजूद सामग्री पढ़कर और यूट्यूब पर वीडियो देखकर अपने बागीचों में प्राकृतिक खेती विधि को ट्रायल के तौर पर करना शुरु कर दिया। इसके मुझे काफी संतोषजनक परिणाम देखने को मिले। इसके बाद मैंने नौणी विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती के जनक पद्मश्री सुभाष पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण लिया फिर समर्पित भाव से इसे अपनी पूरी खेती पर कर रहा हूं'

बागीचे में जीवामृत की तैयारी का निरीक्षण

आत्मा अधिकारियों द्वारा दिलवाए गये प्रशिक्षण से लौटने के बाद रूप चंद राही ने अपनी पूरी 12 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से बागवानी करना शुरु कर दी। प्राकृतिक खेती के लिए जरूरी आदान घर में बनाने के बाद वे अपने बागीचों में इनका प्रयोग कर रहे हैं। इन्होंने बताया कि इस विधि से खेती– बागवानी कर एक साल में वह 2 लाख रूपए का मुनाफा कमा चुके हैं।

‘पहले मेरा रसायनिक खेती में 450 पेटी के लगभग सेब का उत्पादन हो रहा था वहीं प्राकृतिक खेती से यह आंकड़ा 650 पेटी तक पहुंच गया। इसके अलावा सह-फसल के तौर पर उगाए गए मटर और गोभी से क्रमशः 60 और 40 हजार रुपए की अतिरिक्त आय हुई’

मिसाल • नौणी विवि में प्राकृतिक खेती के जनक पद्मश्री सुभाष पालेकर से भी लिया था छह दिन का प्रशिक्षण

रासायनिक छोड़, अपनाई प्राकृतिक खेती, अब रूपचंद कमा रहे लाखों

सिटी रिपोर्टर | सिराज

सिराज ब्लॉक की थाच कटारू पंचायत के रूप चंद राही ने कम उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारी संभाल ली थी। परिवार के भरण-पोषण के लिए उन्होंने खेती को व्यवसाय के रूप में चुना था लेकिन खेती उनकी अलग पहचान बना सकती है ऐसा उन्होंने कभी नहीं सोचा। आज रूप चंद राही मंडी जिला में प्राकृतिक खेती के प्रणेता बनकर उभरे हैं। प्राकृतिक विधि से फलोत्पादन कर जहां उन्होंने अपनी लागत को कम किया है वहीं आस-पास के किसान-बागवानों को इस पर्यावरण हितैषी विधि की तरफ मोड़ा भी है।

दो साल पहले तक रूप चंद भी क्षेत्र के अन्य किसानों की तरह रसायनिक विधि से अपने बगीचों में फलोत्पादन कर रहे थे, लेकिन रसायनों के मानव एवं पर्यावरण पर पड़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए वह रसायनों के प्रयोग को त्यागने का मन बना चुके थे। रसायनमुक्त खेती तकनीक के लिए उन्होंने इंटरनेट पर खोजबीन करनी शुरू की और तब उन्हें प्राकृतिक खेती विधि के बारे में पता चला। इंटरनेट पर मौजूद सामग्री पढ़कर और यूट्यूब पर वीडियो देखकर उन्होंने अपने बगीचों में प्राकृतिक खेती विधि को ट्रायल के तहत शुरू किया जिसके उन्हें संतोषजनक परिणाम देखने को मिले। इसके बाद उन्होंने नौणी विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती के जनक पद्म श्री सुभाष पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण लिया।

इस प्रशिक्षण से उन्हें प्राकृतिक खेती के बारे में स्पष्ट पूर्वक जानकारी मिली जिससे उनकी इस खेती विधि के बारे में फैली भ्रांतियां दूर हुईं। प्रशिक्षण से लौटने के बाद रूप चंद राही ने अपनी पूरी 12 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती से बागवानी करना शुरू कर दी है। प्राकृतिक खेती के लिए जरूरी आदान घर में बनाने के बाद वे अपने बगीचों में इसका प्रयोग कर रहे हैं। रूप चंद राही ने बताया कि उन्होंने इस विधि खेती-बागवानी कर 2 लाख रुपए का मुनाफा कमाया है। जहां पहले रसायनिक खेती में 450 पेटी सेब का उत्पादन हो रहा था वहीं प्राकृतिक खेती से 650 पेटी सेब का उत्पादन हुआ है। इसके अलावा सह-फसल के तौर पर उगाए गए मटर और गोभी से 60 और 40 हजार रुपए की आय हुई है।

रूप चंद राही ने कहा कि पहले खेती में मुनाफा कम होने की वजह से वह एलआईसी एजेंट का काम भी कर रहा था लेकिन अब वह काम छोड़कर पूरी तरह खेती पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूं। अपने खेत-बगीचे में प्राकृतिक विधि अपनाकर कम लागत में भी ज्यादा मुनाफा कमा रहा हूं। इसके साथ ही आस-पास के किसानों को इस रसायनमुक्त खेती की तरफ जोड़ने का प्रयास भी कर रहा हूं। उन्होंने कहा कि इस बार अपना सेब महाराष्ट्र में बेचा है। रसायनमुक्त होने की वजह से उन्हें सेब के अच्छे दाम मिले हैं।

प्राकृतिक खेती के लिए खाद तैयार करते रूप चंद राही।

रसायनमुक्त होने की वजह से मेरे सेब का मुझे अच्छा दाम भी मिला। मुझे हुए मुनाफे को देखकर आस–पास के किसान–बागवान भी मेरे पास आकर यह खेती विधि सीखने का आग्रह कर रहे हैं। मैं अपने काम के साथ–साथ इन किसानों को प्राकृतिक खेती की बारीकियां सिखा रहा हूं। साथ ही साथ उन्हें अपने संसाधन भंडार से खुद तैयार किए आदान भी दे रहा हूं ताकि मेरा क्षेत्र जिला के अन्य किसानों के लिए एक मॉडल बन सके।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
12 बीघा	मक्का, गेहूं, गोभी, मटर, सेब	1,20,000	4,50,000	15,000	6,50,000

रसायनिक एवं जैविक खेती से हुआ मोह भंग

प्राकृतिक खेती से अब किया सफल सफर का आगाज़

सोमकृष्ण
मो. 7018651051

मंडी जिला के करसोग विकास खंड की पांगणा पंचायत के प्रगतिशील किसान सोमकृष्ण ने जैविक खेती को रसायनिक खेती से भी अधिक खर्चीली बताया है। रसायनिक खेती की अधिक लागत होने के कारण पिछले छह वर्षों से सोमकृष्ण ने जैविक खेती करना शुरू किया था। लेकिन इन पिछले छह सालों में जैविक खेती से जुड़े रहने और इसमें वांच्छित परिणाम न पाने के बाद इस किसान ने वर्ष 2018 से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाया है। सोमकृष्ण का कहना है कि यह खेती रसायनिक और जैविक खेती के मुकाबले में बहुत अधिक असरदार और कम खर्चीली है।

'मैं जैविक खेती से छुटकारा पाने के लिए विकल्प तलाश रहा था कि इतने में मुझे आत्मा के माध्यम से आयोजित पद्मश्री पालेकर जी के 6 दिन के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने का सुअवसर मिला। फिर क्या था लबालब भरे उत्साह एवं विश्वास ने अब अपनी पूरी 20 बिघा जमीन पर इस खेती को करने के लिए प्रेरित कर दिया'

खेत पर खड़ी मटर व गेहूं की फसल

प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले सोमकृष्ण को गांववालों के साथ अपने परिवार के विरोध का भी सामना करना पड़ा। लेकिन जिद के पक्के इस युवा ने इस खेती विधि में बताए सभी आदानों का सही से प्रयोग किया और अपनी लागत को 70 हजार रूपये से कम करके 10 हजार तक पहुंचा दिया। आज वह 14 बीघा में खेती और 6 बीघा जमीन में सेब की बागवानी कर रहे हैं। सोमकृष्ण ने बताया कि वे लगभग 2 साल से यह खेती करते आ रहे हैं। इस युवा किसान ने अपने खेतों में मटर, मक्का, गेहूं, बीन्स, गोभी और चने की फसलें भी ली हैं। इतना ही नहीं सोमकृष्ण इंग्लिश वेजिटेवल्स जैसे यलो कैप्सिकम, सैलरी, रेड लैट्यूस, चाइना गोभी को भी प्राकृतिक खेती विधि से तैयार कर बाजार में भेज रहे हैं।

सोमकृष्ण अब अपने आस–पास के गांवों में भी इस खेती विधि का प्रसार कर रहे हैं। अभी तक उन्होंने लगभग 20 किसानों को अपने साथ जोड़ा है। इन किसानों को अपने संसाधन भंडार से जरूरी आदान देने के साथ–साथ वे इनका मार्गदर्शन भी कर रहे हैं। इस परियोजना के प्रसार में भी सोमकृष्ण आत्मा अधिकारियों का सहयोग कर रहे हैं। उनका सपना है कि प्रदेश के लोगों को सही एवं रसायनमुक्त अन्न खाने के लिए मिले ताकि प्रदेशवासी स्वस्थ रहे।

जीरो बजट खेती से उगाया सेब

पांगणा के सोमकृष्ण मल्टीक्रॉप सिस्टम से कमा रहे हैं मुनाफा

रोहित शर्मा । शिमला

किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए खोला है फार्म स्कूल

खुद तैयार करते है कीटनाशक

इंटर्नशिप के लिए आते है जर्मनी के छात्र

‘मेरे दिल्ली के नामी होटलों से सीधा सम्पर्क है, मैं सेब एवं विदेशी सब्जियों को इन होटलों में भेज रहा हूं ना मार्केट की चिंता और उपर से दाम भी बेहतर’

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
20 बीघा	मटर, गेहूं, टमाटर, गोभी, बीन्स, यलो कैप्सिकम, सेब, रेड लैट्युस, सैलरी, चाइना गोभी	70,000	3,00,000	10,000	3,20,000

प्राकृतिक खेती ने बढ़ाया एक लाख मुनाफा

गोहर क्षेत्र के नामी किसान बने माया राम

माया राम
मो. 9882289848

मंडी जिला के गोहर क्षेत्र के स्यांज से संबंध रखने वाले माया राम ने प्राकृतिक खेती करके मुनाफे में एक लाख की बढ़ोतरी कर क्षेत्रवासियों के बीच एक मिसाल कायम की है। रसायनिक खेती में घटती उपज और बढ़ते खर्चों का विकल्प तलाश रहे इस किसान को खण्ड स्तर पर तैनात आत्मा अधिकारियों ने सरकार की 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के बारे में बताया। तत्पश्चात उन्होंने कुफरी में पदमश्री सुभाष पालेकर से 'प्राकृतिक खेती' का 6 दिवसीय प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के बाद घर पहुंचते ही माया राम ने प्राकृतिक खेती विधि से खेती करनी शुरू कर दी और आज वे 7 बीघा जमीन पर इस खेती विधि को सफलतापूर्वक कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती के लिए जरूरी आदानों के निर्माण के लिए वे घर में ही मौजूद पहाड़ी गाय के गोबर और गोमूत्र का इस्तेमाल करते हैं।

गेहूं की फसल का निरीक्षण करते हुए

'प्राकृतिक खेती में मुख्य फसल के साथ अंतवर्तीय फसलें लगाने से एक तरफ जहां मेरी आय में वृद्धि हुई, वहीं जमीन पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। जीवामृत और घनजीवामृत के इस्तेमाल से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ी है, जिसका असर कृषि उपज बढ़ने के तौर पर स्पष्ट दिख रहा है'

पिछले डेढ़ साल में इस विधि से माया राम ने गेहूं, चना, मटर, लहसुन और मक्की की फसल लगाकर 1 लाख का अधिक शुद्ध मुनाफा कमाया है। अनाज और दलहन के अलावा वे सेब और प्लम की खेती भी प्राकृतिक विधि से कर रहे हैं। उन्होंने सेब के 150 और प्लम के 170 पौधे लगाए हैं। इन पौधों में भी वे इस विधि में बताए गए आदानों का प्रयोग करते हैं। इस किसान के लहलहाते खेत अब क्षेत्र के अन्य किसानों को जहां आकर्षित कर रहे हैं वहीं प्राकृतिक खेती सीखने वाले किसानों के लिए यह प्रशिक्षण स्थल बने हैं।

‘मैनें अपने साथ 25 किसानों को भी प्राकृतिक खेती से जोड़ा है और आज वह सभी गम्भीरता से जहरमुक्त खेती के अभियान में जुटे हैं। अब मैं अपनी पूरी 15 बीघा जमीन को प्राकृतिक खेती में बदलने जा रहा हूं’

प्राकृतिक खेती अपनाकर मुनाफे को 1 लाख बढ़ाया

माया राम 7 बीघा क्षेत्र में गेहूं, मटर व चना की सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि से कर रहे खेती

गोहर, 1 मार्च (खमली राम): मंडी जिला के गोहर क्षेत्र के स्यांज से संबंध रखने वाले किसान माया राम खेती में मुनाफा एक लाख रुपए बढ़ाकर क्षेत्रवासियों के लिए मिसाल बने हैं। रासायनिक खेती में घटती उपज और बढ़ते खर्चों का विकल्प तलाश रहे माया राम ने शिमला जिला के कुफरी में पद्मश्री सुभाष पालेकर से प्राकृतिक खेती का 6 दिवसीय प्रशिक्षण लिया और खेती शुरू कर दी और आज वे लगभग 7 बीघा जमीन पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

माया राम ने बताया कि वह सेब और पलम को भी प्राकृतिक खेती कर रहा है तथा गेहूं, चना, मटर, लहसुन और मक्की की फसल लगाकर 1 लाख रुपए का शुद्ध मुनाफा कमाया है। उन्होंने सेब के 150 और पलम के 170 पौधे लगाए हैं। माया राम की आगामी योजना उनकी पूरी 15 बीघा जमीन में प्राकृतिक खेती शुरू करने की है।

पंजाब केसरी ई-पेपर Mon, 02 March 2020 https://epaper.punjabkesari.in/c/49

पालेकर जी से शिक्षित माया राम ने एक ही खेत में गेहूं, चना एवं गोभी की फसल उगाकर आम किसान के लिए एक देखकर सीखने वाला उत्त्कृष्ट मॉडल तैयार कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
7 बीघा	गेहूं, चना, लहसुन, मटर, मक्का, सेब, प्लम	50,000	2,50,000	12,000	3,50,000

पालेकर खेती द्वारा महिला समूह का आगाज़ रसायनमुक्त खेती एवं समृद्ध बने किसान

इंदिरा राणा
मो. 8988069128

समूह की 20 सदस्यों ने प्राकृतिक खेती अपनाकर छेड़ा अभियान

बढ़ते खेती के खर्चे, घटते उत्पादन एवं दिनों–दिन बढ़ती बीमारियों नें ग्रामीण महिलाओं को भी सोचने पर विवश कर दिया है। इन चुनौतियों की गंभीरता को समझने के साथ इससे निपटने के लिए द्रंग ब्लॉक के मसोली गांव की महिलाओं ने क्षेत्र के लोगों को रसायनमुक्त खेती की ओर मोड़ने की एक महत्वपूर्ण पहल शुरू कर दी है। 'कृषि समूह' मसोली की 20 महिला सदस्यों ने अपने खेतों में रसायनिक खरपतवारों, कीटनाशकों और खादों को पूरी तरह बंद करके 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपना लिया है। प्रदेश सरकार की ओर से शुरू की गई 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत कृषि समूह मसोली की प्रधान इंदिरा राणा और सदस्य सोनी देवी ने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि के जनक पदम्श्री सुभाष पालेकर से छह दिन का प्रशिक्षण प्राप्त कर समूह की अन्य सदस्यों को भी इस खेती विधि से जोड़ दिया है।

गेहूं व मटर की फसल

'प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण पाने के बाद जब मैं घर आई तो घर वालों ने इसे अपनाने से बिलकुल मना कर दिया। लेकिन जब मैं नहीं मानी तो पति ने मुझे इस खेती विधि को प्रयोग के तौर पर शुरू करने के लिए अलग से दो खेत दे दिये। मैंने इनमें जो सीखा था वैसे मेहनत की तो अंत में अच्छी फसलों को देखते हुए अब परिवार वाले भी संतुष्ट हो गए हैं'

इंदिरा राणा, समूह की प्रधान

कृषि समूह मसोली की प्रधान इंदिरा राणा ने बताया कि अभी वे तीन बीघा क्षेत्र में प्राकृतिक खेती कर रही हैं लेकिन आने वाली अगली फसल के लिए अब पांच बीघा में इसे करना शुरू कर दूंगी। आत्मा अधिकारियों ने इस महिला समूह का भ्रमण दूसरे उत्त्कृष्ट किसानों के खेतों पर करवाया है ताकि प्रत्यक्ष देखकर इन्हें अच्छे उत्पादन का प्रत्यक्ष प्रमाण मिले।

'जब से हम सबने इस खेती विधि को अपनाया है, तब से ही रसायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग पूरी तरह बंद कर दिया। पहले हमारे परिवार में हर साल लगभग 8-10 हजार रुपये तक की रसायनिक खादें और कीटनाशक आते थे, लेकिन अब इनकी खरीद को बंद कर हम सभी देसी गाय के गोबर और गोमूत्र से ही खेती में प्रयोग होने वाले आदानों का प्रयोग कर रही हैं। इससे हमारी कृषि लागत में कमी आई है'

सोनी देवी, समूह की सदस्य

कृषि समूह मसोली की सदस्य

इस खेती विधि को अपनाने से सारे समूह की सदस्यों को बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। अन्य किसान भी इस खेती विधि के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए वे अन्य किसानों को भी अपने खेतों में इस खेती विधि के बारे में पूरी जानकारी दे रही हैं, ताकि उन्हें भी रसायनमुक्त खेती के लाभ का पता चले। हमारे खेतों में आकर जब अन्य किसान यह देखते हैं कि खर्चा ता बहुत ही कम हो गया और उत्पादन अच्छा हो रहा है तो वह अचम्भित हो रहे हैं।

समूह की सभी सदस्य बहुत उत्साहित हैं कि इस खेती विधि से उन्हें स्वस्थ भोजन, जीवन और परिवेश मिल रहा है।

क्षेत्र को रसायनमुक्त बनाने के लिए अपनाई प्राकृतिक खेती

• स्वस्थ जीवन और स्वस्थ पर्यावरण के लिए महिला समूह की पहल

मसोली गांव की महिलाओं ने अपनाई प्राकृतिक खेती

स्वस्थ जीवन और स्वस्थ पर्यावरण के लिए महिला समूह की पहल

खेती में प्रयोग को लिए थे अलग खेत

प्राकृतिक खेती ने ऋण से दिलाई मुक्ति

अब क्षेत्र के २ हजार किसानों को कर दिया जागरूक

हेत राम
मो. 9816516444

कृषि लागत में लगातार बढ़ोतरी से किसान कर्ज के बोझ तले दबता जा रहा है। ऐसे में प्राकृतिक खेती ने किसानों को कर्जमुक्त रखने के लिए एक सशक्त विकल्प पेश किया है। कर्ज से मुक्ति पाकर किसानों को सशक्त बनाने का ऐसा ही एक उदाहरण मंडी जिला के सराज ब्लॉक के बागवान हेतराम ने किसानों के सामने रखा है। इस ब्लॉक की रोड़ पंचायत के युवा और प्रगतिशील किसान हेतराम ने अपने 13 बीघा के सेब बगीचे में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाकर हर साल बागवानी में बढ़ रहे खर्च को न्यूनतम कर तथा आय में वृद्धि कर किसान–बागवानों के सामने एक मिसाल पेश की है।

'पहले मैं हर साल लगभग 1 लाख 50 हजार रुपये की दवाईयां लेता था और इसके लिए मुझे दवा विक्रेताओं से ऋण लेना पड़ता था। लेकिन अब मैंने अपने पूरे बागीचे में प्राकृतिक खेती विधि को अपना लिया है। देसी गाय के गोबर व गोमूत्र और आसपास की वनस्पतियों से ही खेती में प्रयोग होने वाले सभी आदानों को तैयार करता हूं जिससे मेरी खेती की लागत लगभग शून्य हो गई है'

सेब के बागीचे में जीवामृत का निरीक्षण करते हुए

इस युवा किसान ने पदम्श्री सुभाष पालेकर से छह दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद प्रयोग के तौर पर 3 बीघा क्षेत्र में इसे अपनाकर बागवानी करना शुरू की। तीन बीघा क्षेत्र में इन्होंने 20 सेब के पौधों के साथ मिश्रित खेती के तौर पर राजमाश और धनिया लगाया था, जिसमें उनकी कुल लागत 1300 रूपये और कुल आय 1 लाख 93 हजार रूपये रही। जबकि रसायनिक खेती में इसी क्षेत्र में उनका खर्चा 6 हजार रूपये और कुल लागत 1 लाख 23 हजार रूपये रही थी।

हेतराम अभी तक जिला के 2 हजार से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती विधि के प्रति जागरूक कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि इनमें से 250 ऐसे किसान हैं जिन्होंने पूरी तरह से रसायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग बिल्कुल बंद कर दिया है। हेतराम ने किसानों को प्राकृतिक खेती विधि के बारे में विस्तार से बताने के लिए एक संसाधन भण्डार स्थापित किया है। साथ ही प्रदर्शनी प्लॉट भी लगाया है, जिसमें किसानों को प्राकृतिक खेती विधि के सभी घटकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाती है।

प्राकृतिक खेती ने हेतराम को किया ऋण मुक्त

13 बीघा में प्राकृतिक खेती विधि से कर रहे सेब की खेती, पद्मश्री सुभाष पालेकर से लिया था 6 दिन का प्रशिक्षण

खर्चा 1300 और आमदनी 1 लाख 93 हजार रुपए

दवाई विक्रेता से लेता था कर्ज, अब सभी कर्जों से मुक्त

हेतराम ने प्राकृतिक खेती से पाई कर्ज से मुक्ति

अभी तक 2 हजार किसानों को कर चुके हैं जागरूक

‘प्राकृतिक खेती विधि में किसानों की आय में किसी प्रकार की कमी नहीं आती है और मुनाफे में बढ़ोतरी होती है’

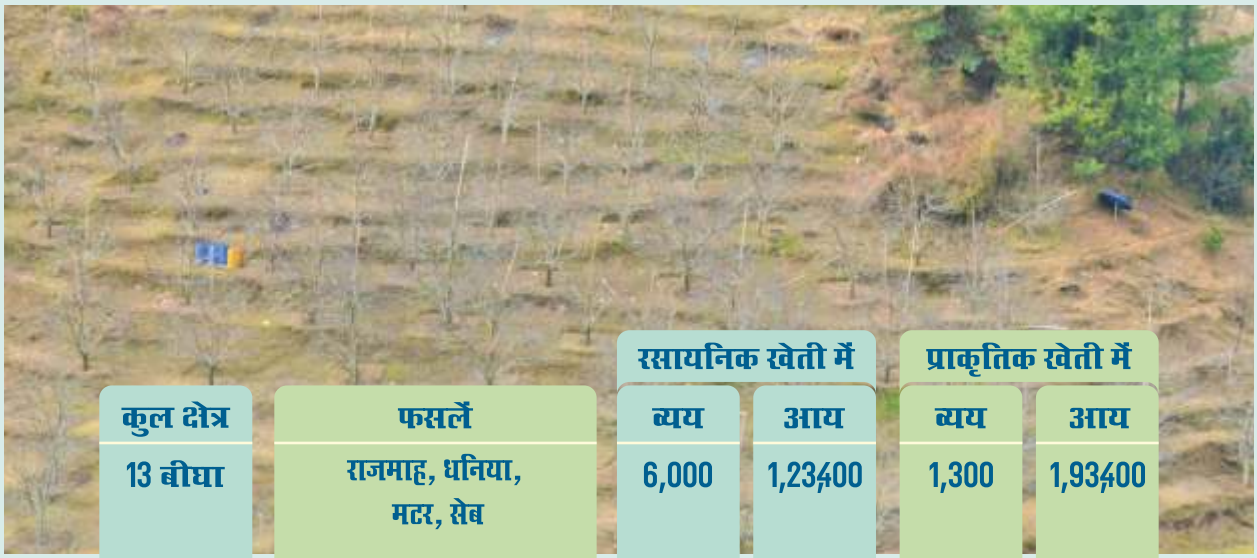

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
13 बीघा	राजमाह, धनिया, मटर, सेब	6,000	1,23,400	1,300	1,93,400

ओले से खराब हो चुकी फसल की औषधि बना जीवामृत

मानचंद
मो. 9857400440

मंडी जिला के गोपालपुर ब्लॉक में प्राकृतिक खेती का कमाल देखने को मिला है। गोपालपुर की भद्रवाड़ पंचायत के दोहदी गांव के किसान मानचंद की फसल दो माह पहले हुई भारी ओलावृष्टि में 70% तक फसल खराब हो चुकी थी, लेकिन प्रदेश में शुरू की गई 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' में प्रयोग होने वाले आदान जीवामृत और सप्तधान्यांकुर के प्रयोग से ओले में खराब हुई फसल में नई जान डालकर क्षेत्र के अन्य किसानों के सामने प्राकृतिक खेती का किसी भी परिस्थिति में कारगर सिद्ध होने का उदाहरण पेश किया है।

'मैंने 8 बीघा जमीन पर पालेकर विधि से खेती करना आरम्भ कर दिया था लेकिन,भारी ओलावृष्टी से खेत में लगी सारी सब्जियों की फसल खराब हो गई और मुझे इससे आमदनी होने की कोई आशा ही न रही, मैं इन फसलों पर जीवामृत का फिर भी प्रयोग करता रहा। जब फसलें ठीक होने लगी तो ऐसा लगा मानों चमत्कार हो गया। इससे मुझे होने वाला नुकसान भी बिल्कुल न के बराबर रह गया है'

मानचंद ने बताया कि 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत पालमपुर में एक साल पहले 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को लेकर आयोजित पद्मश्री सुभाष पालेकर के छह दिन प्रशिक्षण शिविर में जाने का अवसर मिला। अब वह 8 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर अन्य किसानों को भी इस से जोड़कर प्रदेश को जहरमुक्त करने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

मानचंद का मिश्रित खेती का मॉडल

'दो साल पहले तक मैं रसायनिक खेती कर रहा था और इसके लिए मैं हर साल लगभग 35 हजार रुपये के खरपतवार, रसायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग करता था, लेकिन प्राकृतिक खेती को अपनाने के बाद मैंने इन्हें पूरी तरह बंद कर दिया है, जिससे मेरी कृषि लागत अब घट कर 5 हजार रुपये ही रह गई है'

उन्होंने बताया पिछले साल मैंने टमाटर, खीरा, बैंगन और घीया की खेती से ही 2 लाख रूपये कमाए हैं। जबकि रसायनिक खेती में होने वाले खर्चे को भी पूरी तरह से तिलांजली दे दी। अब प्राकृतिक खेती में घर में तैयार होने वाले आदानों के प्रयोग से उन्हें किसी प्रकार की एलर्जी नहीं है। मानचंद नें बताया कि उनके खेतों में उगने वाली सब्जियों को कई लोग उनके पास आकर खेत से ही खरीद रहे हैं। इससे उनका मार्किट तक सब्जियों को पहुंचाने के लिए होने वाला खर्चा तो कम हुआ ही है साथ ही समय की भी बचत हो रही है। इनका कहना है कि गांव के कई लोग शिमला और चंडीगढ़ में रहते हैं और वे वहां से मेरे खेतों में उगने वाली सब्जियों को ही मंगवाते हैं। प्राकृतिक खेती के इस सफल किसान की देखादेखी में क्षेत्र में अन्य 25 किसान भी उनके साथ इस रसायनमुक्त अभियान से जुड़ गए हैं। साथ ही समय–समय पर आत्मा परियोजना के अधिकारी अन्य किसानों को उनके खेतों में प्रशिक्षण देने के लिए ला रहे हैं।

जीवामृत ने डाल दी सब्जियों में जान

मंडी के किसान ने प्राकृतिक खेती से किया कमाल

चंडीगढ़-शिमला से आ रहे आर्डर

'प्राकृतिक खेती ने न केवल मेरा खेती का खर्च घटाकर आय बढ़ाने में मदद की बल्कि मुझे रसायनिक खेती करते समय लगातार हो रही एलर्जी की समस्या से भी निजात दिला दी। अब मैं बिना किसी बीमारी के डर से अपने बनाये आदान प्रयोग कर रहा हूं।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
8 बीघा	टमाटर, खीरा, बैंगन घीया	35,000	1,90,000	5,000	2,00,000

पहले ही साल लाखों का मुनाफा

दशकों से खाली पड़ी भूमि में शुरू की प्राकृतिक खेती

अनिल कुमार
मो. 8350956256

यदि कुछ करने की चाह हो तो, बड़े से बड़े मुश्किल काम को कड़ी मेहनत और सही तकनीक के दम पर करके मनचाहे परिणाम हासिल किये जा सकते हैं। कुछ ऐसा ही कर दिखाया है चौंतड़ा ब्लॉक की भड़याड़ा पंचायत के प्रगतिशील किसान अनिल कुमार ने। अनिल कुमार ने दशकों से बंजर पड़ी जमीन में न सिर्फ अपने गुजारे लायक अनाज उगाना शुरू किया, बल्कि सब्जियां उगाकर उन्हें बाजार में बेचकर अपनी आय में भी बढ़ोतरी की है। अनिल ने अपने साढ़े 7 बीघा प्लॉट में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि के तहत खेती करना शुरू की और खेती के पहले ही साल में एक लाख रूपये का मुनाफा कमा लिया। अनिल ने बताया कि इस खेती को शुरू करने से पहले उन्होंने इसके बारे में पूरी खोजबीन की और इसके बाद कृषि विभाग द्वारा पालमपुर में आयोजित छह दिन का सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण हासिल किया।

मिश्रित खेती मॉडल

'क्योंकि इस खेती विधि के लिए देसी नस्ल की गाय का होना अति आवश्यक था इसलिए मैंने पहाड़ी गाय पालने के लिए लोगों द्वारा छोड़ी गई गाय को घर में लाने के लिए 7 किलोमीटर का पैदल सफर किया। फिर मैंने गाय के गोबर-मूत्र आधारित विभिन्न आदान बनाकर अपने खेतों में मिश्रित खेती शुरू कर दी। आजकल मेरी मटर, गेहूं, चना और सरसों की स्वस्थ फसल सभी को आकर्षित कर रही है'

अनिल ने पिछले साल मटर और मूली की फसल ली थी, जिसमें उन्हें बंपर फसल मिली। उन्होंने बताया कि उनकी सब्जियों को आढ़ती खेतों से ही उठाकर ले जा रहे हैं और दिन–प्रतिदिन मार्किट में डिमांड बढ़ रही है। उन्होंने 9 किलोग्राम बीज से 10 क्विंटल मटर की फसल पाई है, साथ ही 1 क्विंटल धनिया भी सह–फसल के रूप में पैदा किया।

'मैंने पहले ही सीजन में न्यूनतम लागत में एक लाख रुपये का मुनाफा कमा लिया। अन्य किसान भी अब इस खेती के प्रति रुख कर रहे हैं। अपने खेतों की मेढ़ों में नींबू और संतरे के पौधे लगाकर उसी खेत में अतिरिक्त आय के साधन जुटा रहा हूं'

अनिल कुमार ने अपनी फसलों को आवारा पशुओं से बचाने के लिए सोलर फैंसिंग लगाई है। अनिल नें जब प्राकृतिक खेती विधि को अपनाया तो लोगों ने उन्हें ऐसा न करके पहले से प्रचलित रसायनिक खेती करने के लिए कहा। लेकिन आज वे ही लोग प्राकृतिक खेती में मेरे सफल प्रयोग को देखकर इस खेती विधि की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इस काम में मैंने और परिवार ने मेहनत तो की ही लेकिन इस खेती विधि ने यह सिद्ध कर दिया कि बिना खर्चे के भी सफल खेती सम्भव है।

कुल क्षेत्र	फसलें	व्यय	आय
7.5 बीघा	मटर, गेहूं, चना, सरसों, मूली, धनिया	15,000	1,15,000

प्रयोग के तौर पर शुरू की थी प्राकृतिक खेती,

अब साढ़े 5 बीघा में लहलहाई खेती

देवराज भारती
मो. 8894905682

मंडी जिला के चौंतड़ा विकास खण्ड की पसल पंचायत के गांव डुमैहड़ से संबंध रखने वाले देवराज भारती के खेत प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र बनकर उभरे हैं। सरकारी अध्यापक के पद से सेवानिवृति के बाद देवराज भारती ने प्राकृतिक खेती को जनून बनाकर करना आरम्भ किया। आज वे इस रसायनमुक्त, किसान का खेती खर्च घटाकर आय बढ़ाने वाली तथा पर्यावरण हितैषी खेती पद्धति से पुरी तरह संतुष्ट हैं। इस पद्धति को अपनाने से पहले वह भी आम किसान की तरह रसायनिक विधि से खेती कर रहे थे। इसी बीच गांव में आत्मा परियोजना के अधिकारियों ने 'प्राकृतिक खेती' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें हिस्सा लेने के बाद इस अनुभवी किसान का रूझान प्राकृतिक खेती के प्रति ऐसा हुआ कि अपनी 2 बीघा जमीन में प्रयोग के तौर पर प्राकृतिक तरीके से खेती करने का प्रण ले लिया। चूंकि इनके पास अपनी गाय नहीं थी इसलिए इस खेती के लिए जरूरी आदान बनाने हेतु दूसरे गांव से गोबर और गोमूत्र लाते थे। अब इन्होंने खुद साहिवाल नस्ल की गाय खरीद ली है और उसके गोबर–गोमूत्र से बने जीवामृत, घनजीवामृत और अन्य आदानों का भयमुक्त होकर अपने खेतों में प्रयोग कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती विधि से मिल रहे अच्छे परिणामों को ध्यान में रखते हुए अब देवराज ने अपनी साढ़े 5 बीघा जमीन पूरी तरह से प्राकृतिक खेती में बदल दी है।

देवराज भारती का मिश्रित खेती मॉडल

'यद्यपि मैं एक अध्यापक रहा हूं लेकिन मुझे प्राकृतिक खेती करने का जनून मिला हमारे ब्लॉक के बी.टी.एम. श्री सुनिल कुमार से। इस युवा अधिकारी की इतनी लगन थी कि लगातार २ माह तक अपनी मोटर शइकिल से देसी गाय का गोबर और गोमूत्र मेरे खेत में लाते रहे। वहीं सरकार की ओर से दिये जाने वाले अनुदानों से भी इस खेती पद्धती को अपनाने में किसानों को आसानी हो रही है।

इच्छुक किसानों को मैं इस विधि के बारे में सारी जानकारी देता हूं और साथ ही अपनी गाय का गोबर–गोमूत्र शुरूआती प्राकृतिक किसानों को दे रहा हूं। मेरे खेतों में आत्मा अधिकारियों द्वारा अन्य किसानों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मैं प्रशिक्षक की भूमिका निभाता हूं।

मैं सभी किसानों को यही आवाहन करता हूं कि रासायनिक खेती में प्रयोग हो रहे कीटनाशकों के दुष्प्रभाव चारों तरफ देखने को मिल रहे हैं और खेती में इनके अंधाधुंध हो रहे प्रयोग एवं बढ़ते खर्चे से किसान भी बेहद दुखी हैं। प्राकृतिक खेती अपनाकर हम सब अपनी जमीन की सेहत सुधार कर अगली पीढ़ी के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

डुमेहड में गेहूं के साथ मटर भी उगाए

चौंतड़ा के किसान देवराज ने प्राकृतिक खेती के मॉडल किए तैयार

मिश्रित खेती से हुआ फायदा

क्या कहते है खंड तकनीकी प्रबंधक

‘रसायनिक खेती में खाद-कीटनाशक बगैरह पर खर्च ज्यादा और फसल से मुनाफा बेहद कम है। वहीं प्राकृतिक खेती में खेती लागत न के बराबर हो रही है तथा फसल उत्पादन भी ज्यादा है। मेरी देखा-देखी में आस-पास के किसान भी इस खेती के प्रति रुचि ले रहे हैं, और पड़ोस के 2-3 गांव के किसान मेरे खेतों में पहुंच रहे हैं’

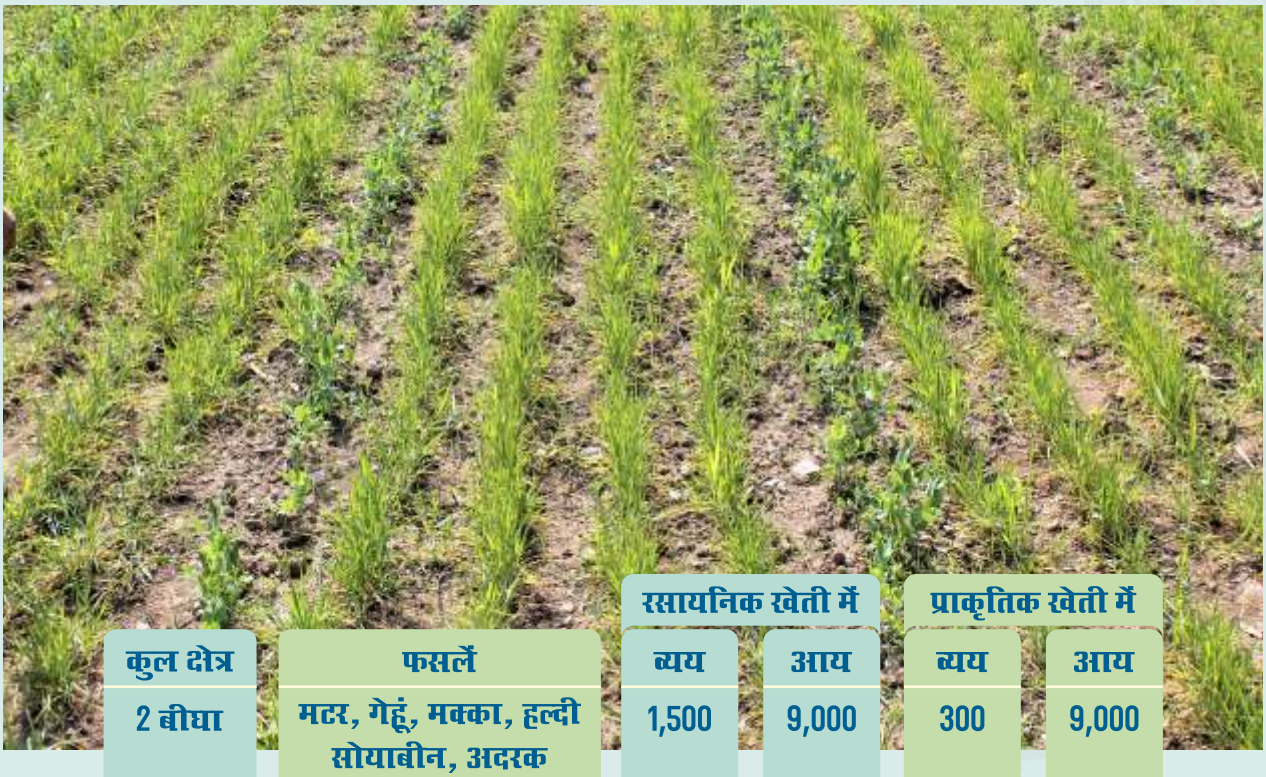

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
2 बीघा	मटर, गेहूं, मक्का, हल्दी सोयाबीन, अदरक	1,500	9,000	300	9,000

जहरमुक्त अन्न उगाने की थी तमन्ना, अब 15 बीघा भूमि पर लिया प्राकृतिक खेती का निर्णय

हुक्म चंद
मो. 9459685645

मंडी सदर ब्लॉक की सैण पंचायत से संबंध रखने वाले हुक्म चंद जिला में विशेष किसान के रूप में ख्याति पा रहे हैं। भारतीय सेना से बतौर कैप्टन सेवानिवृत हुक्म चंद मंडी के पहले ऐसे किसान हैं जो 15 बीघा भूमि पर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती कर इस विधि की सफलता का संदेश दे रहे हैं। स्वास्थ्य के प्रति सजग हुक्म चंद क्षेत्र में पैदा हो रहे अनाज की गिरती गुणवत्ता और खेती में बढ़ते रसायनों के प्रयोग से लगातार चिंता में रहते थे। खाद–कीटनाशक आधारित मौजूदा खेती व्यवस्था के सिद्धातों को चुनौती देने के साथ स्वस्थ अन्न उगाने की धुन इतनी पक्की थी कि प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन्होंने अपनी पूरी जमीन में प्राकृतिक खेती की शुरूआत कर दी और आज वे अपने इस फैसले से पूर्ण संतुष्ट नजर आ रहे हैं।

हुक्म चंद ने बताया कि उन्होंने 2018 में पालमपुर से 'सुभाष पालेकर खेती' का 6 दिवसीय प्रशिक्षण लिया। इस प्रशिक्षण में वह इस खेती पद्धति के जनक पदम श्री सुभाष पालेकर जी के व्याख्यान एवं वैज्ञानिक अनुभव से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी पूरी जमीन में प्राकृतिक खेती करने का निर्णय ले लिया। प्रशिक्षण शिविर से घर लौटते ही हुक्म चंद ने पड़ोसी से देसी गाय का गोबर–गोमूत्र खरीद कर प्राकृतिक खेती अपनाना शुरू कर दिया। गोबर–गोमूत्र की खरीद पर हो रहे खर्चे एवं समय बर्बादी को देखकर हुक्मचंद ने अपनी खुद की गाय खरीदने का सोचा। इसके बाद वे पंचकुला से थारपारकर नस्ल की गाए ले आए और उसके गोबर–गोमूत्र से निर्मित आदानों का खेतों में प्रयोग करना शुरू कर दिया। साथ ही सरकार से अनुदान प्राप्त कर देसी गाय खरीदने के बाद गुण युक्त दूध का प्रयोग घर में करना शुरू कर दिया।

संसाधन भण्डार के साथ हुक्म चंद

'प्राकृतिक खेती आदानों के इस्तेमाल से भूमि और फसल पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिले। जहां एक तरफ भूमि की सेहत में सुधार हुआ वहीं उगाई गई फसलों गेहूं, मटर, मेथी, चना, प्याज, लहसुन के स्वाद में भी रसायनिक के मुकाबले स्पष्ट अंतर देखने को मिला, जो सच में अलग सुकून दे रहा है'

मेरे पड़ोसी किसान जो रसायनिक खेती कर रहे हैं, वे हजारों खर्च कर खाद व कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं, जबकि मैं लगभग नगण्य खर्च में प्राकृतिक आदान प्रयोग करता हूं। इससे मेरी खेती लागत में काफी कमी आई है।

‘मुझे सबसे ज्यादा संतोष इस बात से मिलता है कि मैं औरों की तरह जहरमुक्त नहीं उगा रहा हूं। अब मैं अगले साल से और अधिक ऊर्जा से प्राकृतिक खेती विधि से सेब और अन्य फसलों की खेती करने की योजना बना रहा हूं’

प्राकृतिक खेती अपना कर सैण के हुकम जी रहे खुशहाल जीवन

हिमाचल दस्तक। मंडी

जिला मंडी की ग्राम पंचायत सैण गांव भलाधु के हुकम चंद प्राकृतिक खेती खुशहाल योजना को अपना कर खेती कर रहे हैं। हुकम चंद ने आत्मा परियोजना के माध्यम से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का छह दिन का प्रशिक्षण वर्ष 2018 में पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय से प्राप्त किया। उसके पश्चात इन्होंने लोगों द्वारा खुले में छोड़ी हुई देसी पहाड़ी गाय को पालकर प्राकृतिक तरीके से मिश्रित खेती करना शुरू किया। इससे उन्हें अच्छा मुनाफा होने लगा। हुकम चंद प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत भारतीय नस्ल की थारपारकर को खरीद कर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं तथा साथ ही प्राकृतिक तरीके से देसी नस्ल की गाय के गोबर व गोमूत्र से बने उत्पादों को स्वयं बना रहे हैं और दूसरे किसानों को भी बेच रहे हैं। कृषि विभाग द्वारा संचालित आत्मा परियोजना के अंतर्गत कृषि संबंधित सभी योजनाओं का लगातार प्रचार प्रसार कर किसानों को तकनीकी एवं जैविक खेती एवं शून्य लागत प्राकृतिक खेती से संबंधित जानकारी दी जा रही है। हुकम चंद खंड तकनीकी प्रबंधक रवि कुमार व सहायक तकनीकी प्रबंधक सुभम सूद के साथ जगह-जगह जाकर लोगों को रासायनिक खेती के नुकसानों से अवगत करवा रहे हैं। प्राकृतिक खेती से अधिक मुनाफा कमाने के अपने अनुभवों से किसानों को प्रेरित कर रहे हैं। ग्राम पंचायत सैण के एक मात्र किसान जो जहर मुक्त अनाज उगाकर एक मिसाल बनकर सामने आए हैं।

■ दूसरे किसानों के लिए बने प्रेरणास्रोत

मैं सभी किसान एवं खरीददारों से यही निवेदन करता हूं कि स्वस्थ रहने के लिए स्वस्थ अन्न की उपलब्धता जरूरी है। प्राकृतिक खेती उपभोक्ता को रसायनमुक्त एवं स्वस्थ अन्न उपलब्ध कराने में सक्षम है। प्राकृतिक खेती किसान और उपभोक्ता दोनों की सेहत के लिए अच्छी है। यदि स्वास्थ्यवर्धक अन्न एवं फल खाने के लिए मिलेंगे तो वह हमें दाम देने से नहीं कतराएगा।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में: व्यय	रसायनिक खेती में: आय	प्राकृतिक खेती में: व्यय	प्राकृतिक खेती में: आय
15 बीघा	मटर, गेहूं, मेथी, चना, प्याज, लहसुन	14,940	31,400	9,120	27,400

परिवार का विरोध भी नहीं रोक पाया प्राकृतिक खेती का जनून

67 साल की उम्र में सफल किसान का पाया तमगा

परमा राम
मो. 9805756261

एक ग्रामीण, सेवानिवृत सैनिक, कृषि यंत्रों का इंजीनियर एवं अन्तर्राष्ट्रीय धावक रहने के बावजूद उम्र के 6 दशक पूर्ण करके भी प्राकृतिक खेती अभियान के सारथी बने, ऐसा वाक्या शायद ही सुनने या देखने को मिलेगा। लेकिन देवभूमी हिमाचल मण्ड़ी जिला के सुन्दरनगर ब्लॉक के किसान परमा राम ऐसी ही विलक्षण प्रतिभा के स्वामी हैं। राष्ट्र को समर्पित रहने के बाद भी जोश एवं जनून कैसे बरकरार रखा जा सकता है, इसका जीता जागता उदाहरण हैं यह शख्सियत जिन्होंनें लगभग 8 देशों में मैराथन दौड़ में देश का प्रतिनिधित्व कर मान बढ़ाया। अब स्वस्थ जीवन एवं पर्यावरण का प्रत्यक्ष संदेश लेकर प्राकृतिक खेती के अग्रदूत बन गए हैं। हाल ही में घरवालों के विरोध के बावजूद इस किसान ने 5 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती शुरू कर दी है और वे इसके शुरूआती परिणामों से बहुत खुश हैं। परमाराम ने इस खेती विधि को अपने खेतों में शुरू करने से पहले कृषि विभाग की ओर से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' पर छह दिवसीय प्रशिक्षण भी पालमपुर से प्राप्त किया है।

परमा राम का मिश्रित खेती मॉडल

'मैनें 5 बीघा भूमि में टमाटर और बीन की खेती की थी और इसमें मेरा कुल खर्चा 1500 रुपये आया, जबकि इससे मुझे 80 हजार रुपये की कमाई हुई। मुझे लगता है कि किसानों को कृषि लागत कम करने और अपने लिए स्वस्थ अनाज उगाने के लिए 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को ही अपनाना चाहिए, यही एक मात्र स्थाई विकल्प है'

परमाराम प्राकृतिक खेती से जुड़े सभी नए किसानों को सलाह देते हैं कि खेतों में पालेकर जी द्वारा बताई गई पूरी तकनीक के आधार पर ही यदि काम करेंगे तभी वांच्छित परिणाम मिलेंगे। इस खेती विधि के प्रारम्भ में थोड़ी अधिक मेहनत लगती है, इसलिए खेती में नए औजारों का प्रयोग करना चाहिए। खेतों को जंगली जानवरों से बचाने के लिए जीवामृत एक कारगर विकल्प बनकर उभरा है। जैसे–जैसे इस विधि पर काम साल दर साल करते जाएंगे मेहनत कम होती जाएगी।

परमाराम ने अपनी फसलों को पशुओं से बचाने के लिए खेतों के चारों ओर देसी भिंडी लगाकर एक लाभदायक जैविक बाड़बन्दी की अदभुत मिसाल प्रस्तुत की है। उन्होंने बताया कि भिंडी में काफी मात्रा में कांटे होने के कारण आवारा पशु इनके होने से खेतों में नहीं घुस पाते हैं।

		रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
कुल क्षेत्र	फसलें	व्यय	आय	व्यय	आय
5 बीघा	मटर, गेहूं, मेथी, चना, प्याज, लहसुन, बीन, टमाटर	5,000	70,000	500	80,000

प्राकृतिक खेती-पहल लीना की परिवर्तन गांव का

पंज्याणू गांव में 70 बीघा क्षेत्र में हो रही प्राकृतिक खेती

लीना
मो. 7018317584

मंडी जिला के करसोग विकास खंड के पंज्याणू गांव की लीना शर्मा समूह बनाकर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती की अलख जगा रही हैं। कृषि समूह पंज्याणू में 20 महिलाओं के समूह की अगुवाई कर रही लीना शर्मा ने क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के प्रसार में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। अपनी 5 बीघा जमीन में प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर लीना ने आस–पास के गांवों की महिलाओं को भी इस तरफ मोड़ा है। इस खेती विधि से उन्होंने कम खर्च में मटर, आलू, लहसुन, धनिया,मेथी और गेहूं की फसलें ली हैं, जिसे देखकर आस–पड़ोस की महिलाओं ने भी उनसे यह विधि सीखकर और आज इसे अपना रही हैं। लीना ने अपने 20 महिलाओं के समूह को प्राकृतिक खेती से विभिन्न फसलें तैयार करना सिखा रही हैं, साथ ही पूरे गांव को रसायनमुक्त करने का बेड़ा भी उठाया है।

'हमारे क्षेत्र में पहले से ही खेती रसायनों का प्रयोग कम होता था इस वजह से बहुत सारे लोग कम समय में ही इस खेती विधि से जुड़ गए। हमारा समूह मिल-जुलकर सब सदस्यों के खेतों में प्राकृतिक खेती करता है और साथ ही दूसरे गांवों के लोगों को इस खेती से जोड़ने का काम भी कर रहा है। अभी तक हमने लगभग 100 लोगों को प्राकृतिक खेती से जोड़ दिया है। कम समय में ही यह खेती विधि क्षेत्र के किसानों के बीच लोकप्रिय हो गई है। लोग इस विधि को सीखने के लिए लगातार फोन करते हैं'

खेत में काम करते हुए समूह की सदस्य

समूह की सदस्यों शांता शर्मा, मीना शर्मा, शांता देवी, कमली देवी, सत्या देवी, तेजी शर्मा, सरला देवी, तारा शर्मा ने बताया कि वे सभी लगभग 70 बीघा भूमि में किसानी कर रही हैं। ज्यादातर महिलाओं ने अपने खेतों में गेहूं, मटर, आलू, गोभी, चना और लहसुन की फसल लगाई है। यह सभी अपने खेतों में देसी गाय के गोबर–गोमूत्र से बने आदानों का इस्तेमाल पालेकर विधि द्वारा कर रही हैं। समूह की सदस्य ममता शर्मा ने बताया कि सभी महिलाएं मिल–जुलकर एक–दूसरे के खेतों में काम के लिए सहयोग करती हैं। जीवामृत, घनजीवामृत एवं अन्य आदान बारी–बारी से सबके घरों में बनाए जाते हैं।

खेतों में प्राकृतिक खेती विधि के सफल प्रयोग के बाद समूह सदस्या तेजी शर्मा अब सेब की बागवानी भी इसी विधि से कर रही हैं। उन्होंने 1 बीघा जमीन पर सेब का बागीचा लगाया है। इस बागीचे के साथ वाले खेतों में उन्होंने प्याज, लहसुन और मटर की फसल के साथ सह–फसल के तौर पर धनिया लगाया है जिसकी उन्हें अच्छी पैदावार मिलने की उम्मीद है। तेजी शर्मा ने बताया कि उनके परिवार का प्राकृतिक खेती के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है और वे इस जहर मुक्त खेती को आगे बढ़ाने के लिए उनकी लगातार हौसला अफजाई करते हैं। प्राकृतिक खेती के भविष्य को उज्जवल बताते हुए यह महिला समूह क्षेत्र के सभी किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य लेकर तेजी से काम कर रहा है। जून 2019 में देश की नीति निर्धारक संस्था नीति आयोग के माननीय उपाध्यक्ष डा. राजीव कुमार जी ने विशेष तौर पर इस समूह की सदस्य लीना और सत्या देवी से उनके अनुभव सांझा किये थे। यह इस समूह के लिये गौरवान्वित करने वाले क्षण रहे हैं।

जीरो बजट खेती में मिसाल बना पज्यानू

करसोग से 30 किलोमीटर दूर बसे गांव ने जहर मुक्त खेती को बनाया सहारा, महिला उद्यमी लीना शर्मा की मेहनत लाई रंग

गांव में देसी गाय नहीं थी तो मेरे पति जी यहां से काफी दूर पाठशाला में अध्यापक हैं। वे अपने साथ एक 10 लीटर की कैनी ले जाकर बच्चों के घर से गोमूत्र इकट्ठा कर सप्ताह के बाद जब घर आते थे तो साथ ले आते थे उससे हम विभिन्न आदान बनाते थे।

खेत में काम करते हुए समूह की सदस्य

प्राकृतिक खेती में पाई महारत

अपनी जमीन कम पड़ी तो लीज पर खेत लेकर बढ़ाया काम

संजय कुमार
मो. 9816448233

घर के आस–पास ही पर्याप्त मात्रा में संसाधन होने के बावजूद भी युवा वर्ग आज नौकरी की तलाश में शहरों की ओर निकल रहा है। लेकिन, सुंदरनगर ब्लॉक की पलौटा पंचायत के युवा संजय कुमार ने संसाधन ना होने के बावजूद भी खेती–बाड़ी को ही अपने जीवनयापन का ज़रिया बनाया। इस युवा के परिवार के पास अधिक पुश्तैनी जमीन ना होने के चलते उन्होंने अपने पड़ोसी से 3 बीघा जमीन लीज पर ली और इसमें पॉलीहॉउस लगाकर अपने परिवार का भरण–पोषण आसानी से कर रहे हैं। संजय कुमार ने अपनी लागत को कम कर मुनाफे को बढ़ाने के लिए 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को माध्यम बनाया। खेती में किसी भी तरह के नुकसान से बचने के लिए उन्होंने पहले प्राकृतिक खेती विधि को पूरी तरह से समझा, इसका प्रशिक्षण लिया और इसके बाद अब वे इससे, पॉलीहॉउस में सब्जियां उगाने के साथ अतिरिक्त एक बीघा भूमि में गेहूं, मटर और चने भी सफलतापूर्वक पैदा कर रहे हैं।

'प्राकृतिक खेती विधि में मेरा खर्चा बिल्कुल कम हो गया है। पहले मैं 25 हजार रुपये की रसायनिक दवाईयों का प्रयोग अपने खेतों में करता था, लेकिन अब घर में सभी आदान तैयार कर सालाना खर्चा मात्र 5 हजार रुपये कर दिया है। सरकार द्वारा दिया गया गाय खरीद पर अनुदान मेरी आय बढ़ाने हेतू वरदान साबित हुआ है।

खेत पर जीवामृत का स्प्रे करते हुए संजय

संजय कुमार ने बताया कि इस खेती विधि के अंतर्गत उगाई गई सब्जियों की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पिछले सीजन में उन्होंने 1 लाख रूपये की गोभी, 10 हजार रूपये के मटर और 8 हजार रूपये के मूंगरे बेचे हैं।

'प्राकृतिक खेती विधि के प्रति लोगों का रुझान बढ़ रहा है और क्षेत्र के कई अन्य किसान भी उनके पास इस खेती विधि के परिणामों को देखने के लिए लगातार आ रहे हैं'

'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से गाय खरीद पर मिले 25 हजार के अनुदान और गौशाला के नालीकरण के लिए मिली राशि से मुझे और मेरे जैसे सैंकड़ों किसानों को बहुत लाभ मिला है'

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		व्यय	आय	व्यय	आय
4 बीघा	गेहूं, चना, गोभी, मूली, मटर, मक्का	25,000	1.00.000	5,000	1,18,000

हार्दिक अभिनन्दन
12 अक्तूबर – 16 अक्तूबर, 2018

कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश

कृषक भ्रमण कार्यक्रम

जीरो बजट खेती आने लगी पसंद

दिव्य हिमाचल

इंदिरा मार्कीट में मिलेंगे प्राकृतिक खेती उत्पाद

शिमला के बाद मंडी में खुला प्रदेश का दूसरा बिक्री केंद्र

क्या कहते हैं उत्पाद लेकर आए किसान

स्वयं सहायता समूहों के उत्पाद भी बेचे जाएंगे

जिला में 3770 किसान कर रहे प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती में रुझान बढ़ाएगी सरकार

कम लागत में किसानों की आमदन बढ़ाने के लिए हुआ मंथन

वरिष्ठ संवाददाता – शिमला

- प्रधान सचिव कृषि ओंकार शर्मा ने की समीक्षा बैठक

प्रदेश के किसानों को प्राकृतिक खेती से प्रेरित करने के लिए प्रदेश सरकार ने रोडमैप तैयार कर लिया है। कृषि लागत में कमी और किसानों की आय में बढ़ोतरी के लिए प्रदेश में शुरू की गई प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के कार्यों की प्रगति को लेकर शनिवार को राज्य सचिवालय में प्रधान सचिव कृषि ओंकार शर्मा की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक की गई। इस बैठक में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत शुरू की गई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि के प्रचार और किसानों के लिए चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में 12 जिला के प्रोजेक्ट डायरेक्टर, डिप्टी प्रोजेक्ट डायरेक्टर और विषयवाद विशेषज्ञों से जानकारी ली गई। बैठक के दौरान प्रधान सचिव कृषि ओंकार शर्मा ने अधिकारियों को अधिक से अधिक किसान-बागवानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करके सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के [illegible] लाने के लिए कहा। इसके अलावा उन्होंने अधिकारियों से कहा कि इस खेती विधि को अपनाने से यदि किसी किसान की आय में कमी हुई है, तो उसकी भी रिपोर्ट तैयार करके उन्हें सौंपे।

इस मौके पर प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के परियोजना निदेशक राकेश कंवर ने चार जिलों लाहुल-स्पीति, चंबा, सिरमौर और मंडी में किए जा रहे कार्यों की सराहना की और अन्य जिलों को दिए गए लक्ष्यों को जल्द पूरा करने के निर्देश जारी किए।

मंडी में होगा पांच हजार किसानों का सम्मेलन

राज्य परियोजना निदेशक राकेश कंवर ने कहा कि इस साल के 50 हजार किसानों को जोड़ने के लक्ष्य के साथ ही अगले साल की तैयारियां भी शुरू कर दी गई हैं। उन्होंने कहा कि जैसे ही बीजाई का सीजन खत्म होगा, उसके तुरंत बाद मंडी जिला में पांच हजार से अधिक किसानों का एकदिवसीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसके अलावा उन्होंने कहा कि किसानों को देसी नस्ल की गाय की खरीद में अधिकतम 25 हजार की सब्सिडी देना शुरू कर दिया है। समीक्षा बैठक के दौरान योजना के कार्यकारी निदेशक डा. राजेश्वर सिंह चंदेल ने कहा कि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को प्रदेश में प्रभावी तरीके से अपनाने के लिए पूरे देश में हिमाचल को शाबाशी मिल रही है।

दिव्य हिमाचल Sun, 20 October 2019 https://epaper.divyahimachal.com/c/4486619

प्राकृतिक खेती, खुशहाल किसान योजना से 61 हजार किसानों को मिला लाभ

- सोलर ऊर्जा चालित बाड़ लगाने के लिए 80 फीसदी का अनुदान : बंडारू दत्तात्रेय

ओलावृष्टि के लिए ओला अवरोधक जालियों की स्थापना

कृषि विज्ञान केंद्र अपने कार्यक्रमों में प्राकृतिक खेती को करें शामिल

सुंदरनगर, 18 मार्च (अंसारी) कृषि विज्ञान केंद्र में वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक हुई जिसमें चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर कुलपति डा. ए.के. सरियाल ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना राज्य सरकार की प्रमुख नीति है, अत: कृषि विज्ञान केंद्र अपने कार्यक्रमों में प्राकृतिक खेती को शामिल करें।

मंडी में आठ हजार किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य

दिव्य हिमाचल ब्यूरो — मंडी

Now, buy natural farm items from Mandi outlet

TRIBUNE NEWS SERVICE

MANDI, DECEMBER 3

To provide the better marketing facility to natural farming products in Mandi district, the district administration has opened a sale centre 'Ajivika Vikray Kendra' in the Indira Market complex, Mandi.

The district administration's move is aimed at collecting natural farming products from farmers of the district at this sale centre. These eatables, such as vegetables, fruits and grains, will be free of any kind of chemical manure. Only cow dung and cow urine is used in natural farming to produce healthy products.

DC Rugved Thakur inaugurated the sale centre and said it would play a crucial role in providing better marketing facility to the farmers of the district. Residents can avail the products for domestic use and farmers would get a good price, serving two purposes.

He said the state government was focusing on zero-budget farming in state to produce healthy products and enhance the economy of farmers. It is the second such sale centre in the state. Earlier, a sale centre was opened in Shimla district.

The DC said with the efforts of the Agriculture and Horticulture Departments, about 3,770 farmers were engaged in natural farming in Mandi district. They covered 262 hectares under natural farming.

Also, products produced by self-help groups will be sold at the sale centre in the coming days. There are 762 self-help groups in Mandi district, engaged in production of products for sale to sustain their economy, Thakur added.

DC Rugved Thakur inaugurates 'Ajivika Vikray Kendra' in Mandi.

करसोग में बागवानों के लिए वरदान साबित हो रही सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती की तकनीक

रोगों से बचेंगे सेब के बगीचे : एसएमएस

ऊना-मंडी में भी खुलेंगे बिक्री केंद्र

प्राकृतिक खेती से उगाए गए प्रोडक्ट की बढ़ती मांग पर फैसला

सिटी रिपोर्टर - शिमला

जिला आतमा टीम

डॉ० ब्रह्म दास जसवाल
जिला परियोजना निदेशक आतमा

हमारी टीम के नेतृत्व में किसानों तक प्राकृतिक खेती को पहुंचाने के लिए बीटीएम/एटीएम आपसी समन्वय से जुटे हुए हैं। हमारी टीम के प्रयासों का ही नतीजा है कि जिला में 12,786 किसान इस खेती विधि को अपनाकर सफलतापूर्वक फल व सब्जियों की खेती कर रहे हैं।

डॉ० हितेंद्र सिंह
जिला परियोजना उप-निदेशक-।।

जिला में प्राकृतिक खेती के प्रसार ने गति पकड़ ली है। यह हमारी टीम के अनथक प्रयासों का नतीजा है कि अब किसान-बागवान खुद हमसे संपर्क कर इस खेती विधि से जुड रहे हैं और यह खेती विधि बड़ी तेजी से किसान-बागवानों में ख्याति प्राप्त कर रही है।

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

सुंदरनगर

लेख राज
बीटीएम

संजय कुमार
एटीएम

मनोज कुमार
एटीएम

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

बल्ह

ललित कुमार
बीटीएम

पूनम कुमारी
एटीएम

हितेश सैनी
एटीएम

सदर

रवि कुमार
बीटीएम

शुभम सूद
एटीएम

मुकेश कुमार
एटीएम

द्रंग

पूजा राणा
बीटीएम

देवेंद्र कुमार
एटीएम

प्रदीप कुमार
एटीएम

चौंतड़ा

सुनील कुमार
बीटीएम

शुभम भंडारी
एटीएम

सनी कुमार
एटीएम

गोहर

ठाकर सिंह
बीटीएम

बंटी राम
एटीएम

नेहा वर्मा
एटीएम

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

सराज

सुरेश कुमार
बीटीएम

सूरज नायक
एटीएम

संजय कुमार
एटीएम

बालीचौकी

विद्या नेगी
बीटीएम

विजेंद्र कुमार
एटीएम

ऋषि कपूर
एटीएम

करसोग

चेत राम
बीटीएम

सोनाली महाजन
एटीएम

लेख राज
एटीएम

गोपालपुर

महेंद्र कुमार
बीटीएम

देवेन्द्र कुमार
एटीएम

विकास कुमार
एटीएम

धर्मपुर

अजय कुमार
बीटीएम

नेहा
एटीएम

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम (8.4 µg $TPFg^{-1}$ h^{-1}) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम (112 µg $TPFg^{-1}$ h^{-1}) दर्ज किया गया। अतः **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1	डॉ० ब्रह्म दास जसवाल	परियोजना निदेशक आतमा	94180-58364	47	474
2		उप – परियोजना निदेशक – I		143	
3	डॉ० हितेंद्र सिंह	उप – परियोजना निदेशक – II	94180-34141	284	

खण्ड-स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
सुंदरनगर	लेख राज	बीटीएम	98171-72413	17	49
	संजय कुमार	एटीएम	98051-48100	16	
	मनोज कुमार	एटीएम	94598-11219	16	
बल्ह	ललित कुमार	बीटीएम	94187-28688	15	51
	पूनम कुमारी	एटीएम	89881-60153	18	
	हितेश सैनी	एटीएम	82191-17365	18	
सदर	रवि कुमार	बीटीएम	89881-85135	16	48
	शुभम सूद	एटीएम	97361-23340	16	
	मुकेश कुमार	एटीएम	94599-41126	16	
द्रंग	पूजा राणा	बीटीएम	98173-12162	14	40
	देवेंद्र कुमार	एटीएम	98822-32167	13	
	प्रदीप कुमार	एटीएम	98572-05271	13	
चौंतड़ा	सुनील कुमार	बीटीएम	98820-91962	14	40
	शुभम भंडारी	एटीएम	94598-54666	13	
	सनी कुमार	एटीएम	78072-80057	13	
गोहर	ठाकर सिंह	बीटीएम	98829-90037	12	37
	बंटी राम	एटीएम	98167-65300	13	
	नेहा वर्मा	एटीएम	85808-90134	12	
सराज	सुरेश कुमार	बीटीएम	94183-08714	8	25
	सूरज नायक	एटीएम	98160-02781	9	
	संजय कुमार	एटीएम	98576-30100	8	
बालीचौकी	विद्या नेगी	बीटीएम	86298-68350	10	34
	विजेंद्र कुमार	एटीएम	85805-04027	12	
	ऋषि कपूर	एटीएम	82197-27339	12	
करसोग	चेत राम	बीटीएम	98166-53005	20	60
	सोनाली महाजन	एटीएम	78075-19356	20	
	लेख राज	एटीएम	98821-88303	20	
गोपालपुर	महेंद्र कुमार	बीटीएम	98171-88886	13	41
	देवेन्द्र कुमार	एटीएम	98826-75930	14	
	विकास कुमार	एटीएम	98160-27117	14	
धर्मपुर	अजय कुमार	बीटीएम	94189-73269	17	49
	नेहा	एटीएम	88946-74462	16	
			-	16	

हिमाचल प्रदेश

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला–5 हि.प्र. | दूरभाषः 0177 2830767 | ईमेलः spnf-hp@gov.in
facebook.com/SPNFHP twitter.com/spnfhp youtube.com/SPNFHP

Designed by Tinge Media PR Pvt. Ltd. +91-981 682 9937
प्रतियां - 2500, वर्ष 2020